शोध सार

“हिंदी साहित्येतिहास और अहिंसक इतिहास दृष्टि
(विशेष सन्दर्भ: आचार्य रामचंद्र शुक्लऔर आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी का इतिहास लेखन)”

मुख्य शब्द- अहिंसक इतिहास दृष्टि, साहित्येतिहास

किसी समाज की चेतना के निर्माण मे इतिहास का योगदान महत्वपूर्ण होता है , यह योगदान ठीक वैसे ही होता है , जैसा योगदान किसी परिवार की चेतना के निर्माण में उस परिवार के बुजुर्ग का होता है। क्योंकि जिस तरह किसी परिवार का बुजुर्ग अपने परिवार का बौद्धिक प्रशिक्षण अपने पारिवारिक इतिहास के माध्यम से करता है , ठीक इसी प्रकार समाज का बौद्धिक प्रशिक्षण इतिहासकार इतिहास के माध्यम से करता है , चाहे वह इतिहास समाज का हो या साहित्य का। लेकिन सामाजिक इतिहास लेखन की विभिन्न इतिहास दृष्टियों के अध्ययन से यह स्पष्ट हो रहा है कि इतिहास के माध्यम से किया जाने वाला यह बौद्धिक प्रशिक्षण इतिहासकारों ने समाज को उसके वास्तविक इतिहास के अनुसार ना करते हुए अपने ‘वाद’ के अनुसार किया है।

समय के आयामों से निकली विभिन्न विचारधाराएं और ‘वाद’ अपने निर्धारित स्वार्थों के आधार पर इतिहास लेखन करती आयी हैं जिससे इतिहास में सिर्फ कोलाहल,युद्ध और संघर्ष को ही दर्ज किया गया है जो सत्ता केन्द्रित था। शांति तत्वों ,समरसता प्रेम और जीवन को इतिहास में स्थान नहीं मिला।

इसीलिए इस शोध में शोधार्थी द्वारा अहिंसक इतिहास दृष्टि की सैद्धांतिकी निर्माण करने का प्रयास किया गया है जो इतिहास का उपयोग किसी स्वार्थ , वर्चस्व स्थापना और सत्ता को स्थापित करने के लिए ना करते हुए, ना ही इतिहास को किसी ‘वाद’ की सीमा में बांध के देखें। बल्कि इतिहास को सिर्फ यथा रूप में प्रस्तुत करे जिसमें सामाजिक संघर्ष और विषमताओं के कारणों की पहचान मूल्यनिरपेक्ष रूप से उन तथ्यों को भी दर्ज करे जो समाज में शांति और सद्भावना स्थापित करने में सहयोग करती हों।

शोध सार

प्रस्तुत शोध को तीन अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय में हिन्दी साहित्येतिहास की प्रमुख इतिहास दृष्टियों का परिचयात्मक विवरण के साथ संक्षिप्त विश्लेषण किया गया है, जिससे की इन दृष्टियों की प्रवृत्ती की जानकारी प्राप्त की जा सके।

द्वितीय अध्याय में सामाजिक इतिहास लेखन की प्रचलित प्रमुख इतिहास दृष्टियों जिनमे साम्राज्यवादी , राष्ट्रवादी, सांप्रदायिक , मार्क्सवादी , सबलटर्न , और उत्तरआधुनिकतावादी शामिल है , का अहिंसात्मक इतिहास दृष्टि के आधार पर आलोचनात्मक विश्लेषण करते हुए अहिंसक इतिहास दृष्टि की अवधारणा प्रस्तुत की गयी है।

तृतीय अध्याय में हिन्दी साहित्येतिहास की चयनित इतिहास दृष्टियों आचार्य रामचन्द्र शुक्ल एवं आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के इतिहास लेखन के विशेष संदर्भ में उनके द्वारा लिखे गये हिन्दी साहित्येतिहास के ग्रन्थों का (आचार्य शुक्ल: हिन्दी साहित्य का इतिहास , आचार्य द्विवेदी: हिन्दी साहित्य का आदिकाल, हिन्दी साहित्य की भूमिका एवं हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास) अहिंसक इतिहास दृष्टि की आधार पर विश्लेषण किया गया है।

- **शोध प्रविधि** –

यह शोध विवेचनात्मक श्रेणी का है जिसके अन्तर्गत तथ्य विश्लेषण प्रविधि का प्रयोग किया जायेगा जो आंतरिक तर्क (Internal Logic) पर आधारित होगा। कुछ स्थानों पर तुलनात्मक शोध पद्धति का प्रयोग भी किया जायेगा। प्राथमिक तथ्यों के रूप में आधार ग्रंथो का अध्ययन किया जायेगा। द्वितीय स्रोत के रूप में पुस्तकें,पत्रिकाएं,इंटरनेट सामग्री द्वारा एकत्र की जायेगी।

- **शोध उद्देश्य** –

शोध सार

- ✓ हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की प्रमुख प्रवृतियों और दृष्टियों की पड़ताल करना।
- ✓ इतिहास लेखन की एक नई दृष्टि अहिंसक इतिहास दृष्टि से हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन को देखने की कोशिश करना।

➢ परिकल्पना–

- ✓ हिंदी साहित्य के प्रमुख इतिहास लेखन में अहिंसक इतिहास दृष्टि का अभाव था।
- ✓ आचार्य शुक्ल और हजारी प्रसाद द्विवेदी की इतिहास दृष्टि में मौलिक भिन्नता थी।

➢ शोध सीमा-

यह शोध विषय व्यापक अध्ययन क्षेत्र रखता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल,आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की इतिहास दृष्टियों का विश्लेषण अहिंसक इतिहास दृष्टि से किया जाएगा। समय सीमा के अभाव के कारण वर्णित लेखकों के सिर्फ इतिहास संबंधी पुस्तकों के विश्लेषण तक सीमित किया गया है।

➢ निष्कर्ष-

हिन्दी साहित्य की इतिहास दृष्टियाँ भी साहित्य का इतिहास लिखते समय किसी न किसी 'वाद' के अनुरूप अपनी इतिहास दृष्टि का निर्माण करतीं हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल की इतिहास दृष्टि की प्रवृत्ती हिंसक है। क्योंकि वे हिन्दी साहित्येतिहास में ऐसे साहित्य और रचनाकारों को स्थान नहीं देते है जिनके साहित्य में लोकहित का भाव है , प्रेम है , जीवन है , सामाजिक समरसता का पक्ष है और सामाजिक विषमताओं/कुरीतियों का विरोध है , और ऐसे साहित्य को बाहर रखने के जो तर्क देते है वे साहित्य के

शोध सार

उद्देश्यों के अनुसार नहीं है ,और उद्देश्य भी वे जो उन्होने स्वयं निर्धारित किए हैं ,यह विरोधाभास उनके इतिहास ग्रंथ में स्पष्ट दिखता है। जिसका कारण जातीय , भाषा,धार्मिक और व्यक्तिनिष्ठता के आधार पर भेदभाव दृष्टिगोचर होता है। साथ ही साहित्यिक परवर्तनों को सतत प्रक्रिया के अनुसार ना देखकर प्रतिक्रिया के अनुसार है, जिसका कारण धार्मिक मानते हैं।

आचार्य हजारीप्रसाद की इतिहास दृष्टि में विरोधाभास तो दृष्टिगोचर होता है लेकिन उनके द्वारा लिखे गए हिन्दी साहित्येतिहास में ऐसे साहित्य और रचनाकारों को बगैर किसी भेदभाव स्थान है जिनके साहित्य में लोकहित का भाव है , प्रेम है , जीवन है , सामाजिक समरसता का पक्ष है और सामाजिक विषमताओं/कुरीतियों का विरोध है। अतः कह सकते हैं कि रामचन्द्र शुक्ल और आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी की साहित्येतिहास दृष्टियों में मौलिक भिन्नता भी स्पष्ट दिखाई देती है।